

ध्यानशतकम् भाग-१ (फोल्डर नं. ०२५५९)

मूल - जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण

टीका कर्ता - हरिभद्रसूरिजी

सम्पादक - कीर्तियशसूरिजी

प्रकाशक - सन्मार्ग प्रकाशन अमदावाद

आवृत्ति-१, प्रकाशन वर्ष-२००९, पृष्ठ - ३०२

मुख्य टाईटल

प्रकाशकीय

समर्पणम्

प्रस्तावना - अनुक्रम

ध्यानशतक प्रथमभागनी अनुक्रमणिका -----	१
ध्यानशतक द्वितीयभागनी अनुक्रमणिका -----	७
संपादकीय -----	१५
ग्रंथपरिचय -----	२७
ग्रंथगाथाप्रमाण -----	२८
ध्यानशतक - ग्रंथविषय (CHARTS) -----	३०
आर्तध्यान वगेरे चार ध्यायनुं वर्णन क्या ग्रंथोमां ? -----	४०
चत्वारि आर्तध्यानानि -----	४२
चत्वारि रौद्रध्यानानि -----	४३
ग्रंथकारश्रीनो परिचय -----	४४
ग्रंथकार अने रचनाकाण (सं. विजयकुमार) -----	४५
टीकाशैली -----	५१
टीकाकारश्रीनो परिचय -----	५२
प्रस्तुतग्रंथ विशेषपदार्थो -----	५७
इस्तलिपितप्रतो (PHOTOS)-----	५४
इस्तलिपित प्रतोनो विशेष परिचय -----	७७
ग्रंथ का विषय (पं. बालचन्द्र शास्त्री) -----	८०
ध्यान के स्वामी (पं. बालचन्द्र शास्त्री) -----	८८
ध्यानशतक का तुलनात्मक अध्ययन (पं. बालचन्द्र शास्त्री) -----	९६
ध्यानस्तुति - अधिकार (अध्यात्मसार) -----	१२७
ध्यानशतक - प्रथमभागनी अनुक्रमणिका	
मङ्गलाचरण -----	१

प्रभो अनुत्तरयोगा -----	3
ध्यानाध्यानस्वरूपम -----	५
भावलेश्या जीवपरिणामरूपा -----	५
कायोत्सर्गस्य गुणा -----	६
कायिक - मानसिक - वाचिकध्यानस्वरूपम -----	९
सप्तप्रकारकं ध्यानम -----	१०
भावना - ड नुप्रेक्षा - चिन्तास्वरूपम -----	११
सप्तप्रकारिका - चिन्ता -----	११
ध्यानस्य कालस्वामिनौ -----	१२
द्विप्रकारकं ध्यानम-----	१२
ध्यानस्वामी उत्तमसंघयणशाली -----	१३
योगानां स्वरूपम -----	१४
अयोगि - सयोगिनो -----	१५
ध्यानादनु चिन्ता ध्यानान्तरं वा -----	१५
चिरकालीनध्यानस्य घटमानता -----	१६
ध्यानान्तरिका -----	१६
ध्यानस्य चतुर्भेदा -----	१६
आर्तध्यानादिनां चतुर्णां स्वरूपम -----	१७
आर्तध्यानादिनां फलम -----	२१
नवप्रकारकं ध्यानम -----	२१
आर्तध्यानम	
अनिष्टवियोगचिन्तानाम प्रथमभेद -----	२२
रोगवियोगचिन्तानाम द्वितीयभेद -----	२३
ईष्टवियोगचिन्तानाम तृतीयभेद -----	२४
निदानचिन्तानाम चतुर्थभेद-----	२६
ममत्वमार्तध्यानरूपम -----	२६
संसारवर्धकं तिर्यग्गतेश्चमूलमार्तध्यानम-----	२८
निदानमनन्तसंसारानुबन्धि -----	२८
आर्तस्य चतुर्भेदानां स्वरूपम -----	२८
साधोर्तध्यानं भवति न वा ? -----	३१
प्रशस्तालम्बनस्य स्वरूपम -----	३२
आर्तध्यानं संसारतरुबीजरूपम -----	३३
लेश्या -----	३३
लिङ्गानि -----	३४
लिङ्गानि -----	३४

लिङ्गानि -----	३४
स्वामी -----	३६
स्वामिनो विचारणा -----	३७
स्वामिसत्क - तात्पर्यार्थ -----	३९
रौद्रध्यानम	
हिंसानुबन्धीनाम प्रथमभेद -----	४०
मृषानुबन्धीनाम द्वितीयभेद -----	४२
त्रिप्रकारकमसत्यम -----	४२
स्तेयानुबन्धीनाम तृतीयभेद -----	४६
संरक्षणानुबन्धीनाम चतुर्थभेद -----	४७
चतुष्प्रकारकरौद्रस्य स्वरूपम -----	४८
स्वामी -----	४९
स्वामिनो विचारणा -----	५०
संसारवर्धकं तिर्यग्गतेश्च मूलं रौद्रध्यानम -----	५१
लेश्या -----	५२
लिङ्गानि -----	५२
उसन्न - बहुलादिनां स्वरूपम -----	५२
लिङ्गानि -----	५३
धर्मध्यानम	
द्वाराणि -----	५४
द्वाराणि -----	५४
भावनाद्वारम	
ज्ञानभावनाया स्वरूपं फलानि च -----	५६
दर्शनभावनाया - स्वरूपं फलानि च -----	५८
चारित्रभावनाया - स्वरूपं फलानि च -----	६०
वैराग्यभावनाया - स्वरूपं फलानि च -----	६१
अप्रमादैकाग्रादिभावनानां स्वरूपम -----	६१
वैराग्यस्य स्वरूपम -----	६२
देशद्वारम	
अपरिणतयोगिने -----	६३
परिणतयोगिने स्थानम -----	६४
स्थानाय सामान्यनियमा -----	६४
कालद्वारम -----	६५
आसनद्वारम -----	६६
देश - काला - इडसेनष्वनियमस्य कारणम-----	६६

ध्यानाय योगसमाधेरावश्यकता -----	६७
आलम्बनद्वारम - श्रुतधर्मचारित्रधर्मो -----	६७
वाचनादीनां स्वरूपम -----	६८
सूत्रादेरालम्बनत्वे कारणम -----	६८
क्रमद्वारम -----	६९
ध्यातव्यद्वारम -----	६९
आज्ञाविचयनाम प्रथमभेद -----	६९
आज्ञाविचयनाम प्रथमभेद -----	७०
आज्ञाया अबोधे कारणानि -----	७४
आज्ञाया अबोधे कारणानि	
तत्समयस्य च चिन्तनम -----	७४
जिनस्य यथार्थवादित्वे कारणानि -----	७५
अपायविचयनाम द्वितीयभेद -----	७५
विपाकविचयनाम तृतीयभेद -----	७८
संस्थानविचयनाम चतुर्थभेद -----	८२
द्रव्याणां - लक्षण - संस्थानादीनां चिन्तनम -----	८२
लोकस्वरूपचिन्तनम -----	८५
पृथ्वी - वलयादीनां स्वरूपचिन्तनम -----	८६
जीवस्वरूपचिन्तनम -----	८७
संसारसागरस्वरूपचिन्तनम -----	८८
संसारसागरस्वरूपचिन्तनम -----	८८
चारित्रमहापोतस्वरूपचिन्तनम -----	८९
चारित्रमहापोतस्वरूपचिन्तनम -----	८९
चारित्रमहापोतस्वरूपचिन्तनम -----	८९
मोक्षसुखस्वरूपचिन्तनम-----	९०
सर्वसिद्धान्तपदार्थचिन्तनम -----	९०
आज्ञाविचयादीनां स्वरूपम -----	९१
ध्यातृद्वारम -----	९५
ध्यातुरभ्यन्तरस्वरूपम -----	९५
ध्यातृविचारणा-----	१०२
शुक्लध्यानध्यातृस्वरूपम -----	१०३
अनुप्रेक्षाद्वारम -----	१०५
अनित्यादीनां स्वरूपम -----	१०६
लेश्याद्वारम -----	११०
लिङ्गद्वारम -----	१११

लिङ्गानि -----	१११
निसर्गादीनां सम्यकत्वभेदानां वर्णनम् -----	११२
विनयस्वरूपम् -----	११५
दानस्वरूपम् -----	११५
संयमस्वरूपम् -----	११७

शुक्लध्यानम्

आलम्बनद्वारम् -----	११८
क्षमादीनां स्वरूपम् -----	११८
क्रमद्वारम् -----	१२५
छञ्जस्थेन मनोविषयसंक्षेपीकरणे दृष्टान्त -----	१२६
उपनय -----	१२६
अन्यदृष्टान्त -----	१२६
उपनय -----	१२७
तृतीयदृष्टान्तोपनयौ -----	१२७
शेषयोगनिरोधविधि -----	१२७
ध्यातव्यद्वारम् -----	१३०
पृथकत्ववितर्कसविचारनाम प्रथमभेद -----	१३०
पृथकत्ववितर्कसविचारनाम प्रथमभेद	
प्रथमभेदस्य फलम् -----	१३५
एकत्ववितर्काविचारनाम द्वितीयभेद -----	१३५
एकत्ववितर्काविचारनाम द्वितीयभेद -----	१३५
द्वितीयभेद फलम् -----	१३७
सूक्ष्मक्रियाडनिवर्तिनाम तृतीयभेद -----	१३९
व्युच्छिन्नक्रियाडप्रतिपातिनाम चतुर्थभेद -----	१४४
चतुर्भेदानां स्वरूपम् -----	१४५
चतुर्षु भेदेषु योगसङ्ख्या -----	१४७
सयोगिनो ध्यानस्य सिद्धि -----	१४९
अयोगिनो ध्यानस्य सिद्धि -----	१४९
अयोगिनो ध्यानस्य सिद्धि -----	१५०
अनुप्रेक्षाद्वारम् -----	१५१
अनुप्रेक्षा -----	१५१
लेश्याद्वारम् -----	१५२
लिङ्गद्वारम् -----	१५३
अवधासंमोहयो - स्वरूपम् -----	१५३
विवेकव्युत्सर्गयो - स्वरूपम् -----	१५३

धर्मध्यानफलम -----	१५४
शुक्लध्यानफलम -----	१५६
धर्मशुक्लध्याने संसाराविरोधिनी -----	१५६
ध्यानं मोक्षहेतु -----	१५७
दृष्टान्तेन सिद्धि -----	१५७
दृष्टान्तेन सिद्धि -----	१५७
ध्यायिन – कर्मनाशोडवश्यं भवति -----	१५८
ध्यानं कर्मनाशकम -----	१५८
दृष्टान्तेन स्पष्टता -----	१५८
दृष्टान्तेन स्पष्टता -----	१५९
ईहलौकिकं ध्यानफलम-----	१५९
ईहलौकिक ध्यानफलम-----	१५९
सर्व साध्वाचारा – ध्यानरूपा -----	१६०
ग्रन्थकर्तार -----	१६०
पाठान्तराणि	
गाथा १ त ११ -----	१६१
गाथा १२ त २२ -----	१६२
गाथा २३ त ३९ -----	१६३
गाथा ४० त ५१ -----	१६४
गाथा ५१ त ६४ -----	१६५
गाथा ६४ त ७७ -----	१६६
गाथा ७९ त १०२-----	१६७
गाथा १०३ त १०६ -----	१६८